10 इतिहास का और खुद का सामना करना : इतिहास पढ़ना एक नैतिक उद्यम है

मार्टिन स्लीपर और ऐडम स्ट्रॉम

इतिहास की शिक्षा के उद्देश्यों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्राजील के एक हाईस्कूल छात्र राक्वेल एफ., जिन्होंने क्वीन्स, न्यूयॉर्क स्थित इंटरनेशनल हाईस्कूल में फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ (इतिहास का और खुद का सामना करना) का कोर्स किया, ने समझाया :

''कभी–कभी ब्राजील के मेरे स्कूल में ऐसा लगता था जैसे भाप से ढँकी हुई खिड़कियों वाली कक्षा में बैठना। रोशनी अन्दर आती थी पर आप बाहर नहीं देख सकते थे। इतिहास, अगर अच्छी तरह पढ़ाया जाता है, तो वह उस काँच को पारदर्शी बना सकता है। अपने जीवन और जो कुछ आप स्कूलों में सीखते हैं, उसके बीच के सम्बन्ध को आप स्पष्ट रूप से देख और समझ सकते हैं।''

''मुझे पता है कि हम दोषारोपण करने के लिए इतिहास नहीं सीखते हैं। मेरी सौतेली माँ के परिवार के सभी सदस्य जर्मन हैं। तो क्या मुझे होलोकॉस्ट (विभीषिका) के दौरान घटी ज्यादतियों के लिए उसे जिम्मेदार ठहराना चाहिए? अतीत की गलतियों के लिए हम अगली कितनी पीढ़ियों को दोषी ठहराते रहेंगे?मैं बस उस के लिए जिम्मेदार हूँ जो मैं करता हूँ, न कि उसके भी लिए जो कि मेरे पूर्वजों ने किया था।''

''आइए अब हम यह सोचें कि हम कौन सा इतिहास सीखते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अप्रिय हिस्सों को भी पढ़ें, क्योंकि अप्रिय हिस्सों से ही हम वाकई में कुछ सीखते हैं। इन्हीं हिस्सों में हम उन द्वंदों से वाकिफ हो सकते हैं जो हमें खुद को समझने में मदद करते हैं।''

राक्वेल की ये बातें हमारा ध्यान युवा लोगों के बारे में एक बुनियादी सत्य की ओर खींचती हैं : उनके पास ऐतिहासिक मुद्दों को अपनी जिन्दगियों से जोड़ने की क्षमता भी है और प्रवृत्ति भी। इसी विधि से वे लोग अतीत का अर्थ लगाते हैं। संज्ञानात्मक अंगों के अलावा इतिहास की शिक्षा से बच्चों को जटिल, शैक्षणिक रूप से सुदृढ़, और व्यक्तिगत तरीकों से उनके खिलते हुए नैतिक दर्शन – उनकी अपनी अनोखी आवाज – को विकसित करने में मदद मिलना चाहिए। इतिहास को खुद के साथ जोड़ लेने से विद्यार्थी एक ऐसी बौद्धिक और नीतिपरक शब्दावली विकसित कर सकते हैं जिसका उपयोग वे अपने इतिहास के अध्ययन के लिए, और उनके खुद के नागरिक परिवेशों के घेरे में लिए गए निर्णयों के लिए उसकी सार्थकता के बारे में सोचने के लिए कर सकें।

इतिहास तब जीवन्त हो पाता है जब विद्यार्थी अपनी दुनियाओं से इसका सम्बन्ध जोड़ते हैं जिससे उन्हें इतिहास के नायकों से जुड़ने, उनकी प्रेरणाओं, निर्णयों, और कार्यों का अर्थ समझ पाने में मदद मिलती है। साथ ही, विद्यार्थियों को इस बारे में नई दृष्टि मिलती है कि आज उनके व्यक्तिगत जीवन में तथा बृहद् दुनिया में क्या हो रहा है। इतिहास के अध्ययन तथा आज की दुनिया के अध्ययन के बीच आगे–पीछे हो सकने की यह गतिशीलता किशोरों के लिए – जो खुद को वृहद् इतिहास के हिस्से के रूप में देखने और परिभाषित करने लगे हैं और अक्सर ''अन्तर पैदा करने'' के तरीके ढूँढ़ने लगे हैं – विशेष रूप से अति आवश्यक हो जाती है। यह फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ की शिक्षण पद्धति का, इस संगठन की स्थापनाके समय से ही, अभिन्न हिस्सा रहा है।[1]

यह कह चुकने के बाद, कहना होगा कि वर्तमान समय के सामाजिक व नागरिक मुद्दों से सम्बन्ध जोड़ते हुए इतिहास का अध्ययन करना लगातार बौद्धिक चुनौतियाँ पेश करता है । घटनाओं को उनके ही ऐतिहासिक सन्दर्भ के अन्तर्गत समझना, सतही समानता रखने वाली घटनाओं के बीच सरल तुलनाएँ करने से बचना, और यह समझ पाना कि किस प्रकार अतीत की घटनाओं ने वर्तमान को प्रभावित किया है (या नहीं किया है)। इसमें ऐतिहासिक अवधारणाओं और जाँच–पड़ताल की पद्धतियों के द्वारा किसी खास इतिहास की समझ को और उसके सार्वभौमिक आशयों के मूल्यांकन को प्रभावित करना शामिल रहता है। इसका मतलब खुद को इतिहास के द्वारा गढ़े जाने वाले व्यक्ति की तरह, और उसके अविरत चलने वाले निर्माण में एक खिलाड़ी के रूप में देखना शामिल है।

''इतिहास का सामना करने'' में विद्यार्थियों की मदद करने के लिए इस पर विचार करना अत्यावश्यक है कि विद्यार्थियों की भिन्न–भिन्न व्यक्तिगत और शैक्षणिक पृष्ठभूमियों तथा संज्ञानात्मक विकास के अलग–अलग स्तरों को ध्यान में रखते हुए उनके द्वारा पाठ्यसामग्री को किस तरह समझ पाने की सम्भावना है। इसके लिए ऐसे पाठ और कार्य तैयार करना जरूरी है जो उनके द्वारा व्यक्त किए जाने वाले प्रश्नों और उनकी अनकही चिन्ताओं का समाधान करें, जिससे उन्हें इतिहास की और खुद की एक गहरी समझ बनाने में मदद

मिल सके। साथ ही, शिक्षकों की हैसियत से, हमें इस बात का खयाल रखना होगा कि हम यह मानकर न चलें कि हम जानते हैं कि पाठ्यसामग्री के किसी खास अंश को विद्यार्थी किस तरह लेंगे या कौन से प्रश्न उठाएँगे। इसका मतलब हुआ कि विद्यार्थियों के स्वयं के विचारों को विषयवस्तु के ऊपर लिखने के दौरान तथा कक्षा में चर्चा के दौरान व्यक्त करने की पूरी स्वतंत्रता देना।

> *वस्तुतः इतिहास के किसी भी अर्थपूर्ण अध्ययन के लिए जरूरी है कि अतीत की घटनाओं की तरफ, तथा हम मनुष्यों की हैसियत से खुद को किस तरह से समझते हैं, और किस तरह हम व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से अपना जीवन जीते हैं, इस सबको लेकर उन घटनाओं के क्या निहितार्थ हैं, इसके बारे में बौद्धिक रूप से ईमानदार दृष्टि रखी जाए।*

वस्तुतः इतिहास के किसी भी अर्थपूर्ण अध्ययन के लिए जरूरी है कि अतीत की घटनाओं की तरफ, तथा हम मनुष्यों की हैसियत से खुद को किस तरह से समझते हैं, और किस तरह हम व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से अपना जीवन जीते हैं, इस सबको लेकर उन घटनाओं के क्या निहितार्थ हैं, इसके बारे में बौद्धिक रूप से ईमानदार दृष्टि रखी जाए। विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों ही के लिए इस प्रक्रिया में सही–सही विश्लेषण के साथ–साथ भावनात्मक जुड़ाव होना भी जरूरी होता है – और इसे फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ में दिमाग और दिल कहा जाता है। इस पाठ्यक्रम में बार–बार संज्ञानात्मक असंगति, भावनात्मक बेचैनी और चुभने वाली नैतिक जाँच–पड़ताल सामने आती हैं। नई जानकारी, नए दृष्टिकोण और नए सम्बन्ध बार–बार विद्यार्थियों और शिक्षकों को इतिहास, वर्तमान मुद्दों और स्वयं के बारे में अपनी समझ पर पुनर्विचार करने की चुनौती देते हैं।

> *एक जीवन्त–सजीव, पहुँच के भीतर, अर्थपूर्ण और महत्वपूर्ण इतिहास तटस्थता से लेकर सक्रिय संवेदना तक के पूरे नैतिक विस्तार को दर्शाने वाली मानवीय प्रक्रियाओं को रेखांकित करता है। ऐसे इतिहासों को जुड़ाव और मनन के साथ सीखना युवा आदर्शवाद को जगाता है, क्योंकि युवा लोगों को बोध होता है कि इतिहास बनाने में उन्हें भी भूमिका निभाना है।*

शिक्षकों और विद्यार्थियों को आवश्यक नागरिकीय और नैतिक सम्बन्ध बनाने में मदद करने के लिए इतिहास के माध्यमिक स्कूली पाठ्यक्रमों को एक साझा धुरी के इर्द–गिर्द निर्मित करना सबसे अच्छा होता है। यह ढाँचा, जिसे फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ अपना ''विस्तार और अनुक्रम'' कहता है, जाँच–पड़ताल को व्यवस्थित करता है और उस यात्रा को आकार देता है जो शिक्षक और विद्यार्थी साथ–साथ करते हैं। इसे अक्सर एक वृत्ताकार या पेंचदार यात्रा की तरह दर्शाया जाता है; यात्रा का हर चरण न केवल पहले के तत्वों को आधार बनाकर आगे बढ़ता है, बल्कि उसकी अधिक गहरी और विस्तारित समझ बनाने में भी सहायक होता है। एक दृष्टि से फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ की एक यात्रा पहचान और समूह की सदस्यता के विचार से शुरू करके ऐतिहासिक अध्ययन से होते हुए समाज में व्यक्ति की भूमिका की परिपूर्ण समझ पर पहुँचती है। दूसरी दृष्टि से, यह यात्रा दोहरी पेंचदार गति के समान अधिक होती है जिसमें ''इतिहास का सामना करने'' और ''अपना सामना करने'' के बीच निरन्तर पारस्परिक अन्तर्क्रिया चलती रहती है जिसमें प्रत्येक दूसरे का बोध बढ़ाता है।

प्रसिद्ध विदुषी और मानवाधिकारकर्मी समांथा पावर ने इतिहास के ऐसे पाठ्यक्रमों की सराहना की है जिनमें पारम्परिक तरीके से राष्ट्र–राज्यों और साम्राज्यों तथा उनके नेताओं और उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के क्रियाकलापों पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय, बारीकियों पर ध्यान देते हुए और विकेन्द्रित दृष्टिकोण अपनाते हुए ऐसे लोगों की कहानियों को महत्व दिया जाता है जिनके व्यक्तिगत और सामूहिक निर्णयों ने घटनाओं के प्रवाह को दिशा दी। इस तरह से देखने पर, इतिहास स्थिर न होकर, निर्धारित और अपरिहार्य न होकर, निरन्तर प्रवाहमान होता है। प्रसिद्ध और गैर–प्रसिद्ध, दोनों ही प्रकार के लोग इसके संचालक होते हैं। जो हुआ उससे भिन्न भी हो सकता था बशर्ते कि भिन्न विकल्प चुने गए होते। इसी प्रकार सामूहिक हिंसा के वृत्तान्तों के इतिहास में, जैसा कि उसे फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ द्वारा पढ़ाया जाता है, प्रमुख रूप से और केवल, हिंसा करने वालों और उसके शिकारों की ही कहानियाँ नहीं होतीं। बल्कि एक जीवन्त इतिहास – सजीव, पहुँच के भीतर, अर्थपूर्ण और महत्वपूर्ण – तटस्थता से लेकर सक्रिय सम्वेदना तक के पूरे नैतिक विस्तार को दर्शाने वाली मानवीय प्रक्रियाओं को रेखांकित करता है। ऐसे इतिहासों को जुड़ाव और मनन के साथ सीखना युवा आदर्शवाद को जगाता है, क्योंकि युवा लोगों को बोध होता है कि इतिहास बनाने में उन्हें भी भूमिका निभाना है।

एक कारगर शैक्षणिक पद्धति विद्यार्थियों को यह समझने में मदद करने की है कि किस तरह अतीत की विचार प्रक्रियाएँ और संस्थाएँ समय के बीतने से प्रभावित होती हैं – वह अवधारणा जिसे

इतिहासकार ''निरन्तरता और परिवर्तन'' कहते हैं। यह अवधारणा सुझाती है कि जहाँ मानवीय स्थिति की कुछ प्रवृत्तियाँ अतीत और वर्तमान, दोनों से जुड़ी रहती हैं, इन सम्बन्धों की प्रकृति समय के साथ बदलती जाती है। उदाहरण के लिए, अमानवीकरण की प्रक्रिया को लें, जिसकी कई प्रसंगों के अपने अध्ययन में फेसिंग हिस्ट्री पड़ताल करता है। अमानवीकरण उन क्रमिक चरणों का ऐसा जाना–पहचाना ''संकेतक'' है जो धीरे–धीरे अन्ततः नरसंहार तक ले जाते हैं। इस सन्दर्भ में नाजियों द्वारा यहूदियों के अमानवीकरण, और रवांडा के नरसंहार में टुटसी लोगों के अमानवीकरण में कुछ खास गतिमान विशेषताएँ साझा रूप से देखी जा सकती हैं। पर यह कहने के बाद, यह भी कहना होगा कि इन दोनों कालखण्डों और सामाजिक सन्दर्भों में से प्रत्येक में अमानवीकरण की अपनाई गई विशेष विधियाँ और नीतियाँ भिन्न रूपों में प्रगट हुईं।

शिक्षकों के लिए चुनौती यही है कि विद्यार्थियों की यह अन्वेषण करने में मदद की जाए कि ऐसे विचार और संस्थाएँ किस तरह समय बीतने पर ''जारी रहती हैं'' और साथ ही ''बदलती'' भी हैं। और भी महत्वाकांक्षी लक्ष्य है विद्यार्थियों की यह देखने में मदद करना कि यह विरोधाभास अतीत और वर्तमान के किसी भी गहरे अन्वेषण का अनिवार्य हिस्सा है।

युवा लोग अक्सर इतिहास को ''चीजें जैसी थीं'' इस नजरिए से देखते हैं, बजाय ऐसी प्रक्रिया के जो व्यक्तियों, समूहों और समाजों के क्रियाकलापों सहित अनेक कारकों से प्रभावित होती है। वे अक्सर ऐतिहासिक विवरणों को किसी भी प्रकार के सन्दर्भ में रखे बगैर सच मानकर चलते हैं। हो सकता है कि वे कारण और कार्यकारी माध्यम के एक आयामी प्रतिरूपों का इस्तेमाल करें, जैसे कि यह कहकर कि यहूदियों का सामूहिक संहार हिटलर नाम के एक पागल आदमी के ''कारण हुआ'' था, और फिर यह समझाने का प्रयास करें कि ''क्यों उसने सभी यहूदियों को मार डाला''। ऐसे कृत्यों, जो उन्हें आज के मानकों के हिसाब से साफ तौर पर नासमझी भरे और अनैतिक लगते हैं, से विचलित होकर उनमें पीड़ित व्यक्तियों के साथ सम्वेदना अनुभव करने, पहचाने जा सकने वाले आततायियों और मूकदर्शकों को दोष देने, और उनकी नैतिक दृष्टि को ढँकने वाले भेदों और व्याख्याओं का प्रतिरोध करने की प्रवृत्ति होती है।

थोड़े और जटिल स्तर पर विद्यार्थी मिश्रित तस्वीरें निर्मित करते हैं। वे प्रमाणों के अनेक स्रोतों को एकजुट करते हैं। वे यह समझते हैं कि घटनाओं के अनेक कारण हो सकते हैं और बदलाव के लिए किसी ताकत को ऐसे प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है जिससे पार पाना कभी सम्भव होता है, और कभी नहीं। वे व्यक्तियों की धारणाओं और कृत्यों को उनके चारों ओर जो हो रहा है, उससे प्रभावित होता हुआ तो देखते हैं, पर उससे निर्धारित होता हुआ नहीं मानते। हो सकता है वे सोचें कि लोगों ने जो विकल्प चुने वे क्यों चुने, और यदि वे उनके स्थान पर होते तो क्या करते। जब वे अतीत और वर्तमान का सम्बन्ध जोड़ते हैं तो हो सकता है कि वे दूसरों के स्थान पर अपने को रखने का भरपूर प्रयास करें। इस बात का अहसास होने पर कि वे स्वयं अपने ही आदर्शों पर हमेशा खरे नहीं उतरते, वे दूसरों को आँकने में उदार हो सकते हैं। पर इसके साथ ही उदीयमान नैतिक दार्शनिकों की तरह वे अतीत और वर्तमान के लोगों से अपनी साझा मानवता को स्वीकारने की, एक–दूसरे की जरूरतों को पहचानने और उनका ध्यान रखने की, और अपने नजदीकी दायरे से दूर के लोगों की फिक्र करने की अपेक्षा करते हैं।

दृष्टिकोण थोड़ा और विकसित होने पर, युवा और वयस्क इतिहास को कई चश्मों के माध्यम से देख सकते हैं। वे समझते हैं कि व्यक्तिगत चुनाव और कृत्य अनेक परस्पर सक्रिय कारकों द्वारा प्रभावित और सीमित होते हैं, और वे विविध पृष्ठभूमियों, परिस्थितियों और ऐतिहासिक कालखण्डों में साझा रचनाएँ खोजते हैं। वे जानते हैं कि वर्णित ''तथ्य'' अक्सर ऐसे दृष्टिकोणों से छनकर आते हैं जो संस्कृति, विचारधारा और अनुभव से प्रभावित होते हैं। अतः किसी कहानी को देखने के कई कोण हो सकते हैं, पर यह जरूरी नहीं कि सभी समान रूप से महत्वपूर्ण हों। इस बारे में विद्वान लोग ईमानदारी से असहमत हो सकते हैं कि कोई बात क्यों हुई और यदि अन्य निर्णय लिए गए होते तो क्या हो सकता था। उनके विवरणों और व्याख्या सिद्धान्तों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना विद्यार्थियों के लिए सम्भव है। इतिहास की प्रामाणिक समझ के लिए ऐतिहासिक प्रमाणों को इकट्ठा करने और उनके महत्व को आँकने का ईमानदार प्रयास करना आवश्यक है।

ऐतिहासिक विवरणों की छानबीन करके विद्यार्थी मनुष्य की प्रकृति के बारे में निष्कर्ष निकाल सकते हैं। परन्तु उन्हें नैतिक सापेक्षवाद, दोष दर्शन या हताशा में फंस जाने की जरूरत नहीं है; इसके बजाय जब वे जानकारी पर आधारित विचारपूर्ण निर्णय लेंगे और अपने आदर्शों पर चलने की कोशिश में अपरिहार्य रूप से कठिनाइयों का सामना करेंगे, तो वे सक्रिय बोध, चिन्तन और सावधानीपूर्वक सोचे–समझे कृत्यों का मार्ग अपना लेंगे।

फेसिंग हिस्ट्री की कक्षाओं में अतीत और वर्तमान के बीच जानकारी पर आधारित तुलनाएँ करना एक नीरस शैक्षणिक अभ्यास हो यह जरूरी नहीं है, वास्तव में ऐसा होना भी नहीं चाहिए। ऐतिहासिक और समसामयिक विवरण जिस समानुभूति, चिन्ता, क्रोध और नैतिक नाराजगी को जगाते हैं, वे सभी भाव क्रियात्मक विश्लेषण में

और समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब हम विद्यार्थियों को फिक्र (शब्द के सभी अर्थों में) से पढ़ने, निरीक्षण करने और सुनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तो हम उनसे थोड़ी देर के लिए मूल्यांकन करना स्थगित करके दूसरों की आवाजों को सुनने, अपने विश्लेषण में सन्दर्भ की अधिक जानकारी को शामिल करने, और अपने नैतिक आवेश को दबाए बिना अपनी खुद की सोच पर चिन्तन करने को कह सकते हैं। वास्तव में, विद्यार्थियों में मन की ऐसी अनुशासित आदतें, जो प्रामाणिक समझ पाने का प्रयास करती हों, विकसित करने में मदद करके तथा साथ ही भावनात्मक जुड़ाव और नैतिक सोच को समर्थन देकर, हम विचारपूर्ण नैतिक तर्क गढ़ने और जानकारी पर आधारित फैसले और दायित्व लेने की उनकी क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

युवा लोग नैतिक दार्शनिक होते हैं। वे अपनी पढ़ाई में पूर्वाग्रह, सहिष्णुता और न्याय की पहले से बनी धारणाएँ लेकर आते हैं। जब वे किशोरावस्था से गुजरते हैं तो उनके मन में ये मुद्दे गहराई तक जम जाते हैं: व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान को शामिल करने; और स्वीकारे या ठुकराए जाने, समरूपता और विषमता, लेबल लगाए जाने, बहिष्कार, निष्ठा, औचित्य और हम उम्र लोगों का दबाव इन सब की चिन्ता।

युवा लोग नैतिक दार्शनिक होते हैं। वे अपनी पढ़ाई में पूर्वाग्रह, सहिष्णुता और न्याय की पहले से बनी धारणाएँ लेकर आते हैं। जब वे किशोरावस्था से गुजरते हैं तो उनके मन में ये मुद्दे गहराई तक जम जाते हैं: व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान को शामिल करने; और स्वीकारे या ठुकराए जाने, समरूपता और विषमता, लेबल लगाए जाने, बहिष्कार, निष्ठा, औचित्य और हम उम्र लोगों का दबाव जैसी बातों की चिन्ता। हमारे शिक्षण का उनकी नई–नई खोजी गई आत्मदृष्टि, दृढ़ सच्चाइयों और विविध दृष्टिकोणों से, तथा साथ ही काल्पनिक रूप से सोच पाने की उनकी बढ़ती हुई क्षमता, और नए–नए जाने गए क्रियाकलापों में व्यक्तिगत अर्थ ढूँढ़ने के रुझान से सरोकार होना बेहद जरूरी है। वर्तमान और भविष्य को समझने के लिए विद्यार्थियों को अतीत में अर्थ ढूँढ़ने का, और उसके पूर्वाग्रहों, भेदभाव, लचीलेपन और साहस की विरासत समेत इतिहास की पूरी जटिलता में उसकी पड़ताल करने का अवसर मिलने की जरूरत होती है। इतिहास के शिक्षकों की तरह हमारा कार्य ऐसे अध्ययन में सहायता देना है, और यह इस तरह से करना है कि उनकी नैतिक क्षमता का उपयोग हो और जिन समुदायों, समाजों और संसार में वे रहते हैं उनमें उनकी नागरिक भूमिका के बारे में उनकी नैतिक कल्पनाओं को प्रेरणा मिले।

टिप्पणियाँ

1. ऐलेन स्टॉस्कॉफ, ''कोर कॉन्सैप्टस इन हिस्टॉरिकल अंडरस्टैंडिंग'' अप्रकाशित पृष्ठभूमि शोधपत्र, फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़, 2005
2. फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ के पूर्ण विवरण के लिए मॉरिस ऐलियस एवं हैरियट अर्नाल्ड द्वारा सम्पादित द ऐजुकेटर्स गाइड टू इमोशनल इंटैलीजैन्स एण्ड अकैडमिक ऐचीवमेंट (कॉर्विन प्रेस 2006) में पृष्ठ 240.246 पर मार्टिन ई. स्लीपर तथा मार्गोट स्टर्न स्ट्रॉम का लेख ''फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़'' देखें।

ऐडम स्ट्रॉम *फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ में रिसर्च एण्ड डैवेलपमैंट के निदेशक हैं। वे फेसिंग हिस्ट्री के अनेक प्रकाशनों के लेखक व सम्पादक हैं, जिनमें शामिल हैं: 'फन्डामैंटल फ्रीडम्स: ऐलेनॉर रूज़वेल्ट एण्ड द यूनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइटस' और 'स्टोरीज़ ऑफ आइडैन्टिटी : रिलीजन, माइग्रेशन एण्ड बिलॉगिंग इन ए चेंजिंग वर्ल्ड'। उनसे इस Adam_Strom@facing.org ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*

मार्टिन स्लीपर *फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज़ के एसोशिएट ऐक्ज़िक्यूटिव ऐडिटर हैं। फेसिंग हिस्ट्री के स्टाफ में शामिल होने से पहले वे ब्रुकलिन, मैसाचुसेटस में रंकल स्कूल के प्रधानाचार्य थे। इतिहास, नागरिक शास्त्र और नैतिक अध्ययन पर लिखे गए उनके अनेक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। उनसे इस marty_sleeper@facing.org ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*